7

fo|k ds egÙo ij lEHkk"k.k

प्रिय शिक्षार्थी, पूर्व पाठ में आपने नीतिज्ञ चाणक्य के जीवनदर्शन के विषय में जाना। इस पाठ में आप विद्या के महत्त्व के विषय पर संस्कृत भाषा में सम्भाषण करना सीखेंगे। विद्या रूपी धन सभी प्रकार के धनों में प्रधान धन हैं। विद्या रूपी धन को हमसे कोई भी छीन नहीं सकता है और यह ऐसा धन है जिसे जितना अधिक खर्च करते हैं यह उतना ही बढ़ता रहता है।

विद्या रूपी धन को न तो भाई बंटवारा कर सकते हैं, न ही राजा या सरकार छीन सकती है और न ही चोर चोरी कर सकता है। इस तरह विद्याधन सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। आपने अपने दादा–दादीए नाना–नानी,

माता–पिता या घर के अन्य वयोवृद्ध तथा ज्ञानवृद्ध लोगों से भी ज्ञान के महत्त्व पर बाते सुनी होंगी। आप इस पाठ में ठीक वैसी की विद्या के महत्त्व की बाते संस्कृत में संभाषण के माध्यम से जान पायेंगे।

mÌs';

यह पाठ पढने के बाद आप सक्षम होंगे:

- संस्कृत भाषा में सम्भाषण कर पाने में;
- विद्या का महत्त्व समझ पाने में;
- विद्या प्राप्ति के लिए स्वयं को प्रेरित कर पाने में; और
- प्रश्नोत्तर शैली मे संस्कृत भाषा सीख पाने में।

7.1 eyikB

f'kf{kdk & lçHkkre~ ! Nk=k%A

नमस्कार विद्यार्थियो।

Nk=k% & lçHkkre~ f'kf{kdsA

नमस्कार आचार्य।

f'kf{kdk & v| 'kkHkua fnue~A fo|k;k% vkjEHk% Hkor~A jke ! Ro~ fo|k;k% egRo~ çdk'k;A

आज शुभ दिन है। विद्याध्ययन आरंभ करते है। राम आज आप विद्या के महत्त्व पर प्रकाश डालिये।

jke% & **vke f'kf{kd! fo|k vLekd thou vR;re vko';dhA fo|k 0;;u le)k Hkofr] l¥p;u {kh.kk HkofrA**

जी शिक्षिका। विद्या हमारे जीवन में अत्यन्त आवश्यक है। विद्या खर्च करने से बढ़ती है और संचित करने से क्षीण होती है।

f'kf{kdk & **lR;l onfl jke! v/;;u fo|k o/krA vu/;;uu fo|k u"Vk] foLe`rk p HkofrA lhr! Hkorh fo|k;k% fo"k;s 'ykde ,dl onfr okA**

बिल्कुल सही कहाँ राम। अध्ययन करने से विद्या में वृद्धि होती है। अध्ययन नहीं करने से विद्याा नष्ट और विस्मृता हो जाती है। सीता। विद्या के विषय में क्या एक श्लोक सुनायेंगी।

lhrk & vke f'kf{kd! vg /kU;kfLeA fo|k;k% o.kue ,oefLr&

जी शिक्षिका! यह मेरा सौभाग्य होगा। यह ज्ञान से संबंधित श्लोक है।

u pkjgk; u p jktgk;
u HkkrHkkT; u p Hkkjdkfj A
O;; —r o/kr ,o fuR;
fo|k /ku lo/kuç/kkue AA

f'kf{kdk & 'kkHku onfl lhrA lEçfr vL; 'ykdL; vFk onr l/khj !

बहुत अच्छा कहा सीता। अब सुधीर आप इस श्लोक का अर्थ बताइये।

l/khj% & ç.kefe! fo|k lo"k /ku"k ç/kku /kue vfLrA pkjk% bn /ku u gjfUrA jktk p vL; /kuL; gj.k vleFk%A Hkkrj% vL; /kuL; foHkktu u dofUrA bn /ku Hkkj% u HkofrA O;;u bn /ku u {kh.k Hkofr] vfi r o/krA

नमस्कार। विद्या सभी तरह के धन में सर्वाधिक प्रधान धन है। चौर इस धन की चोरी नही कर सकते है। राजा भी इस धन को छीन लेने में असमर्थ है। भाईयों को भी इस धन को

बांट नहीं सकते है। इस धन का अपने ऊपर कोई भार भी नही होता है। खर्च करने पर यह धन क्षीण नही होता बल्कि बढ़ता है।

f'kf{kdk & 'kkHkuk onfl lq/khj%A vU;n /kua ,rk–'ka u HkofrA rn /kUk pkSjk% gjfUr] jktk p dj:i.k gjfrA Hkkrj% /kuL; foHkktua dqoZfUr] Hkkj:i p lo /kueA

बहुत अच्छा कहा सुधीर। विद्या तुल्य कोई भी धन नही है चोर अन्य प्रकार के धन को चोरी कर सकता है। राजा शुल्क के रूप में धन को ले सकता है। सम्पति के बटवारे में भाई धन को बांट सकते हैं तथा अन्य सभी तरह के धन भारकारी होते है।

'kCnkFk%

१) महत्वम् – प्रमुखत्व

२) शोभनम् – उत्तम

३) भ्रातृभाज्यम् – भाईयों के मध्य विभाजन

४) भ्रातरः – भाई

५) प्रचारः – प्रसार

६) सम्प्रति – अब

ikBxr i'u& 7-1

I. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए–

1. चौराः किं न हरन्ति?
2. प्रचारेण विद्या कीदृशी भवति?
3. विद्याधनं कीदृशं भवति?
4. व्ययेन विद्या कीदृशी भवति?

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. भ्रातरः ________ विभाजनं कुर्वन्ति ।

2. __________ विद्या समृद्धा भवति ।
3. __________ विद्यायाः हरणे असमर्थाः भवन्ति ।
4. न __________ न च भारकारि ।

vkius D;k lh[kk\

- संस्कृत में सम्भाषण।
- विद्या का महत्त्व।
- विद्या का विलक्षणता।
- संस्कृत के नवीन शब्द ज्ञान।

ikBkr iz'u

1. निम्न शब्दों का अर्थ बताईये।
   - i. सम्प्रति
   - ii. विभागः
   - iii. भ्रातरः
   - iv. प्रचारः
2. विद्या के महत्त्व पर अपने शब्दो में संक्षिप्त में टिप्पणी लिखिए।

d{kk &VII

fVIi.kh

3. नीचे दिये गये चित्रों को देखकर प्रत्येक के विषय में पाँच–पाँच संस्कृत वाकयों का निर्माण कीजिये

(i)

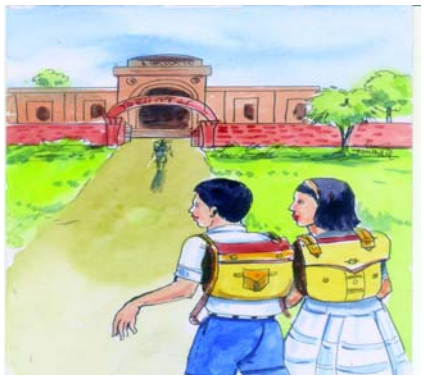

(ii)

mÙkjekyk

7.1

I.

1. विद्याधनम्
2. समृद्धा
3. सर्वधनेषु
4. वर्धते

II.

1. धनस्य
2. व्ययेन
3. राजा
4. भ्रातृभाज्यं